Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 2252–2255

ROLE OF SPORTS IN NATIONAL DEVELOPMENT OF INDIA

भारत के राष्ट्रीय विकास में खेल की भूमिका

Mukesh Agarwal [1]

[1] Department of Physical Education, Maharaja Agrasen College, University of Delhi, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.5200

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Sports is ushering in a new era in India. New enthusiasm, motivation, and better state of the art safe infrastructure have made the experts more dedicated and demonstrative. Another reason for including sports is that various sports provide the youth with an opportunity for social interaction, allowing them to develop the knowledge, skills and attitudes necessary for their full participation in civil society. Both culture and sports are considered to be the basic rights of human beings. Sports are an integral part of our lives, since ancient times, sports make us practice discipline and consistency, as well as provide proper entertainment. It increases our concentration level and fills our mind with positivity. Indian people have started taking keen interest in sports and are working hard to bring medals and honour to the country. Rural people are also getting opportunities and recognizing the importance of sports, they are performing excellently.

Hindi: खेलकूद भारत में एक नए युग की शुरुआत कर रहा है। नए उत्साह, प्रेरणा, और सुरक्षित अवसंरचना की बेहतर स्थिति के लिए विशेषज्ञों को अधिक समर्पित और प्रदर्शनात्मक बना दिया है। खेलों को शामिल करने का एक और कारण यह है कि विभिन्न खेल युवाओं को सामाजिक संपर्क का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे नागरिक समाज में अपनी पूर्ण भागीदारी के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं। संस्कृति और खेल दोनों मानव के मूल अधिकार माने जाते हैं। खेल हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं, क्योंकि प्राचीन काल से ही खेल हमें अनुशासन और निरंतरता का अभ्यास कराते हैं, साथ ही उचित मनोरंजन भी प्रदान करते हैं। यह हमारी एकाग्रता के स्तर को बढ़ाता है और हमारे मस्तिष्क को सकारात्मकता से भरता है। भारतीय लोग खेलों में गहरी रुचि रखने लगे हैं और देश को पदक तथा मान-सम्मान दिलाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। ग्रामीण लोगों को भी अवसर मिल रहे हैं और वे खेलों के महत्व को पहचानकर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं।

1. प्रस्तावना

खेलकूद भारत में एक नए युग की शुरुआत कर रहा है। नए उत्साह, प्रेरणा, और सुरक्षित अवसंरचना की बेहतर स्थिति के लिए विशेषज्ञों को अधिक समर्पित और प्रदर्शनात्मक बना दिया है। खेलों को शामिल करने का एक और कारण यह है कि विभिन्न खेल युवाओं को सामाजिक संपर्क का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे नागरिक समाज में अपनी पूर्ण भागीदारी के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं। संस्कृति और खेल दोनों मानव के मूल अधिकार माने जाते हैं। खेल हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं, क्योंकि प्राचीन काल से ही खेल हमें अनुशासन और निरंतरता का अभ्यास कराते हैं, साथ ही उचित मनोरंजन भी प्रदान करते हैं। यह हमारी एकाग्रता के स्तर को बढ़ाता है और हमारे मस्तिष्क को सकारात्मकता से भरता है। भारतीय लोग खेलों में गहरी रुचि रखने लगे हैं और देश को पदक तथा मान-सम्मान दिलाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। ग्रामीण लोगों को भी अवसर मिल रहे हैं और वे खेलों के महत्व को पहचानकर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं।

खेल मानव के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक माने जाते हैं; जो व्यक्ति किसी न किसी खेल में संलग्न रहता है, वह स्वस्थ रहता है। भारत में अनेक खेल प्रतिभाएँ उभरी हैं, जैसे 'फ़्लाइंग सिख' के नाम से प्रसिद्ध मिल्खा सिंह और 'उड़न परी' के नाम से प्रसिद्ध पी. टी. ऊषा, मास्टर ब्लास्टर के रूप में विख्यात सचिन तेंदुलकर और हॉकी के जादूगर के रूप में प्रसिद्ध मेजर ध्यानचंद हैं। भारत सरकार ने मेजर ध्यानचंद सिंह के सम्मान में 2012 से प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को खेल दिवस मनाने का निर्णय लिया। खेल शारीरिक स्फूर्ति को बढ़ावा देने के साथ-साथ मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी जीवनशैली संबंधी बीमारियों को नियंत्रित करते हैं, जो भारत को वार्षिक 6 ट्रिलियन रुपए का नुकसान पहुँचाती हैं।खेल, जाति,

धर्म और क्षेत्रीय विभाजनों को दरकिनार करते हुए राष्ट्रीय एकता और सामूहिकता को सुदृढ़ करने वाले एक शक्ति के रूप में कार्य करता है। क्रिकेट विश्व कप और ओलंपिक में विजय सामूहिक गौरव और देशभक्ति की भावना को जागृत करती है। उदाहरण के लिए, टोक्यो ओलंपिक (2021) में नीरज चोपड़ा का स्वर्ण पदक और टी-20 विश्व कप में भारत की विजय ने सम्पूर्ण देश को एकजुट किया और वैश्विक मंच पर भारतीय प्रतिष्ठा को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं।वर्तमान तकनीकी सहायक उपकरण, एआई-आधारित प्रशिक्षण और प्रसारण समाधान खेल प्रौद्योगिकी में उन्नति को प्रोत्साहित करते हैं।इनकी नवाचार भारत की तेजी से विकसित होती डिजिटल अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाते हुए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न करते हैं। खेल आयोजनों में पर्यावरण-संवेदनशील प्रथाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है। युवाओं की ऊर्जा को खेल की रचनात्मक गतिविधियों में संलग्न करने से अपराध या मादक पदार्थों के दुरुपयोग में संलिप्तता की संभावना में उल्लेखनीय कमी आती है।इस प्रकार, खेल पुनर्वास और शांति स्थापना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं। कबड्डी, खो-खो, कुश्ती और मल्लखंब जैसे पारंपरिक खेल भारत की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करते हुए आधुनिक खेल ढाँचे में समावेशी दृष्टिकोण अपना रहे हैं। प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) ने कबड्डी में रुचि को पुनर्जीवित कर आर्थिक दृष्टि से इसे सुदृढ़ करते हुए लीग का मूल्य प्रति फ्रैंचाइज़ 100 करोड़ कर दिया है। खेल उद्योग जर्सी, फिटनेस उपकरण और खेल-तकनीक स्टार्टअप के क्षेत्रों में उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करता है। कल्ट फिट और प्लेयो जैसी कंपनियाँ बाजार में प्रमुखता प्राप्त कर चुकी हैं। ये उद्यम भारत के तेजी से विकसित होते स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान करते हुए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न करते हैं। पूर्वाग्रह, रूढ़िवादिता और हाशिए पर पड़े लोगों को तोड़ना: खेल सामाजिक पूर्वाग्रहों, रूढ़िवादिता और संकीर्णता को चुनौती देते हैं, और आदिवासियों, दलितों तथा दिव्यांगों जैसे हाशिए के समूहों के लिए समावेशन और सशक्तिकरण के अवसर उत्पन्न करते हैं। पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता नवदीप सिंह और अवनी लाकड़ा जैसे एथलीटों ने भारत में दिव्यांगों के प्रति धारणा को पुनः परिभाषित किया है। मसौदा राष्ट्रीय खेल नीति 2024 जैसी नीतियाँ समावेशिता, पैरा-खेलों और वंचित समुदायों के लिए बुनियादी ढाँचे के वित्तपोषण पर जोर देती हैं।

2. भारत में खेल संस्कृति के विकास में प्रमुख बाधाएँ

अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे और सुविधाएँ: गुणवत्तापूर्ण अवसंरचना की कमी ग्रामीण क्षेत्रों और स्थानीय प्रतिभाओं के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। महत्त्वाकांक्षी खिलाड़ियों को खराब रखरखाव वाली सुविधाओं, सीमित उपकरणों और दूरस्थ केंद्रों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मानव संसाधन विकास संबंधी स्थायी समिति ने पाया कि वर्ष 2018-19 और 2019-20 के दौरान खेलो इंडिया योजना पर वास्तविक व्यय क्रमशः 324 करोड़ रुपए और 318 करोड़ रुपए था, जबकि अनुमानित आवंटन क्रमशः 520 करोड़ रुपए और 500 करोड़ रुपए से काफी कम था।

शिक्षा पर अधिक ध्यान: भारतीय संस्कृति में शैक्षणिक उपलब्धियों को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे खेलों की उपेक्षा होती है। इसे रोजगार या बेहतर जीवन विकल्प के बजाय केवल एक पाठ्येतर गतिविधि के रूप में देखा जाता है। माता-पिता शैक्षणिक सफलता को प्राथमिकता देते हैं, जिससे प्रतिस्पर्धात्मक खेलों में भागीदारी सीमित हो जाती है। युवा मामले और खेल मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, 20% से कम भारतीय स्कूलों में ऐसी खेल सुविधाएँ हैं जो न्यूनतम आवश्यक मानकों को पूरा करती हैं। दुर्बल प्रशासन और नौकरशाही की अक्षमता: भारत में महासंघों की कार्यप्रणाली में नौकरशाही, कुप्रबंधन और व्यावसायिकता की कमी के कारण प्रमुख पदों पर विशेषज्ञों के स्थान पर राजनेताओं का अधिग्रहण होता है, जिससे निर्णय प्रक्रिया और खिलाड़ियों की सुरक्षा एवं सुविधाएँ प्रभावित होती हैं।

क्रीड़ा भागीदारी में लैंगिक असमानता: महिला एथलीटों को अपर्याप्त प्रशिक्षण सुविधाओं, असमान वेतन और सामाजिक कलंक जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालांकि, नीरज चोपड़ा और पी.वी. सिंधु, अवनी लाकड़ा आदि की सफलताओं के बावजूद, खेलों में लैंगिक समानता एक दूर की संभावना प्रतीत होती है। जमीनी स्तर पर प्रतिभा की उचित पहचान और पोषण के लिए सुव्यवस्थित प्रणाली की कमी के कारण कई प्रतिभाशाली एथलीट, विशेषकर ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में, उपेक्षित रह जाते हैं। तुलसीदास बलराम, भारतीय फुटबॉल के स्वर्णिम युग के दौरान भारत के महानतम फुटबॉल खिलाड़ियों में से एक थे, जिनकी खोज केवल इस कारण हुई क्योंकि एक स्थानीय कोच ने उन्हें दूर-दराज के क्षेत्र में नंगे पाँव खेलते हुए देखा था। उनकी कहानी इस बात पर प्रकाश डालती है कि संभावित एथलीटों की पहचान के लिए जमीनी स्तर पर स्थानीय प्रणाली का होना अनिवार्य है।

क्रिकेट का प्रभुत्व अन्य खेलों पर: भारत में क्रिकेट पर अत्यधिक ध्यान देने के कारण अन्य खेलों की उपेक्षा हुई, जिससे गैर-क्रिकेट खेलों के लिए एक असमान वातावरण उत्पन्न हुआ। उदाहरण के लिए, वर्ष 2021 में, भारत में क्रीड़ा राजस्व पर राष्ट्रीय व्यय का 88% हिस्सा क्रिकेट के लिए था, जिससे हॉकी, बैडमिंटन या एथलेटिक्स जैसे अन्य खेलों के लिए न्यूनतम संसाधन बचे।

नीति का अल्पकालिक दृष्टिकोण: भारत का संधारणीय विकास के स्थान पर अल्पकालिक उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित करना, सशक्त खेल संस्कृति के निर्माण में बाधा उत्पन्न कर रहा है। ओलंपिक पदक की व्यक्तिगत उपलब्धियों का उत्सव अक्सर आधार स्तर पर निरंतर विकास के लिए आवश्यक निवेश की अनदेखी करता है। यह खेल प्रणाली में अप्रत्यक्ष अभिजात्यकरण को जन्म देता है, जिससे एथलीटों के प्रशिक्षण के लिए व्यापक और दीर्घकालिक रणनीति का अभाव, खराब प्रदर्शन में परिलक्षित होता है।

3. खेल संस्कृति के संवर्धन के लिए उपाय

स्थलीय स्तर पर बुनियादी ढाँचे को संवर्धित करना: सरकार को सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के माध्यम से विशेष रूप से ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में खेल बुनियादी ढाँचे के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए। प्रत्येक ब्लॉक में बहु-स्तरीय सुविधाओं से युक्त मिनी स्पोर्ट कैम्पस जैसी पहलों से सभी के लिए पहुँच सुनिश्चित की जा सकती है। खेलो इंडिया योजनाओं के तहत आवंटित धनराशि का समय पर उपयोग किया जाना चाहिए। निधि के उपयोग की निगरानी और अकुशलता को रोकने के लिए नियमित लेखा परीक्षा और पारदर्शी तंत्र की स्थापना आवश्यक है।

खेलों को एक व्यवहारिक जीवन पथ विकल्प के रूप में बढ़ावा देना: खेलों को नियमित पाठ्यक्रम में समाहित किया जाना चाहिए, ताकि शिक्षा और शारीरिक शिक्षा को समान महत्व प्रदान किया जा सके। युवाओं को प्रेरित करने के लिए विभिन्न खेलों में एथलीटों की उपलब्धियों का राष्ट्रव्यापी जागरूकता अभियान आरंभ किया जाना चाहिए। सेवानिवृत्त एथलीटों के लिए पेंशन, जीवन पथ परामर्श और कौशल-आधारित प्रशिक्षण की पेशकश से खेल एक आकर्षक विकल्प बन सकता है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के एथलीटों को तैयार करने वाले विद्यालयों और कॉलेजों को खेल-समर्थक वातावरण निर्मित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

खेल महासंघों में प्रशासन को सुदृढ़ करने के लिए आवश्यक सुधार लागू करना होगा, जिसमें प्रशासकीय पदों के लिए अनिवार्य व्यावसायिक योग्यता और राजनीतिक हस्तक्षेप को समाप्त करना शामिल है। संघों में शासन की निगरानी और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए स्वतंत्र नियामकों की स्थापना आवश्यक है। निकायों के नियमित क्रियान्वयन, ऑडिट और व्हिसलब्लोअर प्रक्रिया के माध्यम से सुधार संभव है। अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के निर्देशों के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय प्रशासनिक मानदंडों का पालन करना और सुधार तटस्थ प्रक्रिया की आधारशिला होनी चाहिए।

लैंगिक असमानता को समाप्त करने हेतु खेलों में महिलाओं के लिए विशेष अकादमियाँ स्थापित की जाएं, जो प्रशिक्षण के लिए सुरक्षित और अनुकूल वातावरण प्रदान करें। महिला-केंद्रित खेल कार्यक्रमों के लिए वित्तपोषण में वृद्धि की जाए और वित्तीय प्रोत्साहन उपलब्ध कराए जाएं। उत्पीड़न और भेदभाव के खिलाफ कठोर कानून लागू किए जाएं, साथ ही शिकायत निवारण तंत्र को शीघ्रता से कार्यान्वित किया जाए। रूढ़िवाद को चुनौती देने के लिए अभियानों को प्रोत्साहित किया जाए और सभी स्तरों पर भागीदारी बढ़ाने के लिए सफल महिला एथलीटों को रोल मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया जाए।

प्रतिभा पहचान प्रणाली का कार्यान्वयन: देशव्यापी प्रतिभा खोज पहल, विद्यालय स्तर की प्रतियोगिताएँ और वंचित क्षेत्रों में स्थानीय टूर्नामेंटों की निगरानी हेतु गैर-सरकारी संगठनों और स्थानीय निकायों के साथ सहयोग स्थापित करना आवश्यक है। लक्षित एथलीटों का एक डेटाबेस तैयार करें, जो उन्नत कोचिंग और सुविधाओं से युक्त विशेष प्रशिक्षण अकादमियों से संबंधित हो।

खेल विषयों में संतुलित फोकस स्थापित करना: विभिन्न प्रायोजन अवसरों में विविधता और गैर-क्रिकेट खेलों में निवेश करने वाली कंपनियों को प्रोत्साहित करते हुए सभी खेलों के लिए समान मीडिया कवरेज को बढ़ावा देना चाहिए, विशेषकर ओलंपिक और एशियाई खेलों जैसे अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों के दौरान। क्रिकेट के अलावा अन्य खेलों की उपलब्धियों को उजागर करने के लिए एक केंद्रीय खेल प्रसारण मंच की स्थापना की जानी चाहिए। केंद्र और राज्य सरकारों को मिलकर प्रशंसक आधार विकसित करने और कॉर्पोरेट निवेश आकर्षित करने के लिए हॉकी, कबड्डी और एथलेटिक्स जैसे खेलों के लिए राज्य स्तरीय लीग को प्रोत्साहित करना चाहिए।

प्रौद्योगिकी और डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग: प्रशिक्षण और स्काउटिंग में सुधार हेतु एआई-आधारित प्रदर्शन विश्लेषण की उन्नत तकनीकों को अपनाना आवश्यक है। उभरते एथलीटों के पंजीकरण के लिए एक ऑनलाइन पोर्टल स्थापित करें, जिसमें ई-कोचिंग, प्रशिक्षण वीडियो और फिटनेस टिप्स जैसे संसाधन सभी खिलाड़ियों के लिए समय पर उपलब्ध हों।

शहरी और ग्रामीण विकास नीतियों में खेलों का समावेश: नवीन नियोजन नीतियों में खेल अवसंरचना को सम्मिलित कर यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि खेल गतिविधियों के लिए खुले स्थानों का संरक्षण हो सके। ग्रामीण क्षेत्रों में खेल विकास को मनरेगा जैसी नई रोजगार सृजन योजनाओं से जोड़ना आवश्यक है, जहां खेल सुविधाओं का निर्माण रोजगार गतिविधि के रूप में शामिल किया जा सकता है। वंचित क्षेत्रों में निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए क्रीड़ा अकादमियों की स्थापना कर सब्सिडी प्रदान की जानी चाहिए।

सम्पूर्ण खेल पारिस्थितिकी तंत्र को प्रोत्साहित करना: खिलाड़ियों की चोटों की रोकथाम और प्रदर्शन में सुधार हेतु विश्वस्तरीय सुविधाओं के लिए खेल विज्ञान और चिकित्सा केंद्र की स्थापना की जानी चाहिए। भारत को आर्थिक और उच्च गुणवत्ता वाले खेल उपकरणों का केंद्र बनाने के लिए निर्माण में अनुसंधान को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

खेल पर्यटन का विकास: स्टेडियम, खेल संग्रहालय, और विश्वस्तरीय प्रशिक्षण सुविधाओं की स्थापना के माध्यम से इसे एक खेल पर्यटन केंद्र के रूप में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। आर्थिक विकास और युवाओं को प्रेरित करने के लिए अविकसित खेल क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों की मेंज़बानी आवश्यक है। हिमालय या तटीय क्षेत्रों में साहसिक खेलों को बढ़ावा देने के साथ-साथ रोजगार के अवसरों के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

युवा एवं स्थानीय स्तर पर प्रतिभा प्रदर्शन कार्यक्रम: प्रतिभा प्रदर्शन कार्यक्रमों (विशेषकर विशिष्ट एवं ओलंपिक खेलों के लिए) के लिए अंतर्राष्ट्रीय खेल महासंघों के साथ सहयोग स्थापित किया जाना चाहिए। युवा एथलीटों को प्रतिष्ठित प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में अपने देश और विदेश में प्रशिक्षण

तथा उन्नत कौशल प्राप्त करने की क्षमता प्रदान की जानी चाहिए। इसी प्रकार, भारतीय प्रशिक्षकों और एथलीटों को घरेलू स्तर पर प्रशिक्षित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाना चाहिए।

खेलों को स्वास्थ्य नीतियों से संलग्न करना: मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों के नियंत्रण हेतु सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियानों में खेलों को सम्मिलित किया जाना चाहिए। सभी आयु वर्गों में शारीरिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रमों के लिए युवा मामले और खेल मंत्रालय तथा स्वास्थ्य मंत्रालय के बीच सहयोग स्थापित किया जाना आवश्यक है।

खेल इन्क्यूबेटर और स्टार्टअप का विकास: सरकार द्वारा अनुमोदित इन्क्यूबेटरों के माध्यम से खेल-केंद्रित नवाचार की स्थापना कर भारतीय एथलीटों के लिए सस्ती प्रशिक्षण उपकरण, खेल विश्लेषण और फिटनेस प्रौद्योगिकी पर कार्य किया जा सकता है। कार्यस्थल में खेल मानसिक स्वास्थ्य, सहयोग, समन्वय और प्रदर्शन को सुधारने में सहायक हो सकते हैं। नियमित शारीरिक गतिविधियाँ, समूह खेल और फिटनेस प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा सकती हैं। भागीदारी को प्रोत्साहित करना और शारीरिक गतिविधि के लिए समर्पित स्थान प्रदान करना कार्य-जीवन संतुलन और समग्र कल्याण को बढ़ावा दे सकता है।

4. निष्कर्ष

प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को राष्ट्रपति भवन में भारत सरकार युवा प्रतिभाओं के उत्कर्ष और खेल संस्कृति के संवर्धन हेतु राष्ट्रीय खेल दिवस का भव्य आयोजन करती है। राष्ट्रपति द्वारा देश के खिलाड़ियों को राष्ट्रीय खेल पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं, जो उन्हें उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ तिरंगे का मान भी दिलाते हैं। राष्ट्रीय खेल पुरस्कारों में अर्जुन पुरस्कार, राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार और द्रोणाचार्य पुरस्कार जैसे कई सम्मान शामिल हैं। खेलों में भागीदारी को प्रतिस्पर्धात्मक और मनोरंजक बनाकर इसे प्रोत्साहित करते हुए नियमित रूप से सामुदायिक स्तर पर फिटनेस और खेल शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए। भारतीय खेल प्रतिभा और आयोजनों को वैश्विक मान्यता दिलाने के लिए खेल पर्यटन को 'अतुल्य भारत' जैसे पहलों से जोड़ा जाना चाहिए।